मंथन के मोती

सुलेखा समिति की प्रथम राष्ट्रीय स्तर की निबंध प्रतियोगिता " महिलाओं की शिक्षा का स्वरुप कैसा हो " ने सफलता के नए कीर्तिमान बनाएं | ये सफलता राष्ट्रीय नेतृत्व, सुलेखा सदस्यों व सभी प्रदेश पदाधिकारियों की संगठन के प्रति समर्पित सदभावना का परिणाम है |

सताईस प्रदेशों से इक्यासी निबंध आये | सभी प्रतियोगियों ने अच्छा प्रयास किया | वे महिलाएं जो घर गृहस्थी में रमी हुई हैं और घर की चार दीवारी को ही अपनी दुनिया मान कर उसी में ख़ुशी का अनुभव करती हैं, उनके द्वारा अपने विचारों को अभिव्यक्त करना और दृढ़ता से सबके सम्मुख रखना सच मुच प्रसन्नता का विषय है | धीरे धीरे ही सही इन प्रयासों से जन जागृति तो आएगी ही | इन सभी निबंधों को पढ़ने के बाद कुछ बातें ऐसी थीं जिन्हे मैं आपके साथ बाँटना चाहूंगी |

प्रत्येक निबंध में सभी ने एक बात लिखी कि पढ़ाई पर विशेष ज़ोर दिया जाना चाहिए | पौराणिक, ऐतिहासिक महिला चरित्रों से आज की नारी की तुलना अधिकाँश ने की | मुग़ल अत्याचारों को सर्व सम्मति से आज की नारी की दुर्दशा का व समाज में फैली घूँघट प्रथा जैसी कुरीति का एक बड़ा कारण भी माना | गर्भावस्था में स्वस्थ साहित्य का पठन पाठन होना चाहिए जिससे गर्भस्थ शिशु पर अच्छे संस्कार पड़ें यह विषय दो चार सदस्यों ने ही लिखा पर बहुत अच्छा लिखा |

कंप्यूटर शिक्षा के लिए सभी एक मत्त थे | टेक्नोलॉजी के युग में प्रगति के साथ कदम ताल करने के लिए इंटरनेट का उपयोग करने के लिए भी कई सदस्यों ने लिखा | आत्म रक्षा हेतु जुडो कराटे जैसे उपाय भी बालिकाओं को सिखाये जाएं इस पर भी चर्चा थी | महिला सम्बन्धी स्वास्थ्य समस्याओं की भी जानकारी और उनका निदान हो सके इसके लिए कार्यक्रम आयोजित किये जाने पर भी बल दिया गया |

एक बात सभी लेखों में थी की शिक्षा ऐसी हो जो घर और ऑफिस में सामंजस्य बिठा सके | महिलाओं को अपने पैरों पे खड़ा कर सके जिस से आपात काल में वे असहाय न रहें और स्वयं को संभाल सकें | महिला अधिकार के कानूनों की समुचित जानकारी दी जाए इस पर भी बल था | सभी ने लिखा था की अपनी संस्कृति से सामंजस्य बैठा कर नवीन का स्वागत करें |

कुछ एक प्रतियोगियों ने ही इस बात पर बल दिया की शुरू से ही बेटों को भी इस बात की शिक्षा दी जाए की स्त्री का सम्मान कैसे करना चाहिए जिस से सुरक्षा सम्बन्धी समस्याओं में कमी आये और समाज का संतुलन बना रहे | व्यवसाय से जोड़ने वाली प्रोफेशनल उच्च शिक्षा पर बल दिया तो सामाजिक सांस्कृतिक जुड़ाव पर भी सभी ने लिखा |

यद्यपि अधिकाँश लेख अच्छे लिखे गए थे, पर चयन प्रक्रिया के कुछ नियम होते हैं जिन्हे मानना चयन कर्ता का परम धर्म होता है | कुछ लेख शब्द सीमा में नहीं थे यानी या तो 600 शब्द या सीधे 1500 शब्द तक | कई निबंधों को बहुत ख़राब तरीके से टाइप किया हुआ था जो पढ़ने में ही नहीं आ रहा था | ऐसे कई कारणों से बहुत से लेख प्रतियोगिता से बाहर हुए |

कुल मिलाकर लेखों के विचार काफी तर्क संगत अपनाये जा सकने वाले और दिलचस्प थे | सभी समाज जनों को चिंतन मनन व अपने विचारों को लेखनी बद्ध करने के अवसर मिले इस दिशा में यह एक अच्छा प्रयास था |

सुलेखा समिति प्रभारी
मंजू मानधना